सतत और व्यापक आकलनः यात्रा और समझ

उत्तराखण्ड में सीसीई पायलट प्रोजेक्ट के अनुभव

सौरभ राय

परिप्रेक्ष्य

आकलन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। यह एक ऐसा जरिया है जिसकी मदद से यह जाना जा सकता है कि सीखने वाले ने न केवल कितना सीखा है अपितु किस गहराई के साथ सीखा है। बच्चों की समझ को जानना एक गंभीर काम है। केवल मासिक अभ्यास कार्य, छमाही और सलाना इम्तिहान लेने से मूल्यांकन के उद्देश्य पूरे नहीं होते। मूल्यांकन का एक उद्देश्य बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को भी समझना है। बच्चे हमेशा सीखते रहते हैं। इसलिए आकलन को सीखने-सिखाने के बीच में निरंतर चलने वाली प्रक्रिया होना चाहिए। एक बच्चे की प्रगति की स्पष्ट और समग्र तस्वीर पाने के लिए आवश्यक है कि समय-समय पर बच्चों की विकसित क्षमताओं और कौशलों के बारे में पता लगाया जाए और उसे दर्ज किया जाए। इस मायने में सतत एवं समग्र मूल्यांकन (सीसीई) बच्चों के बेहतर सीखने का एक महत्त्वपूर्ण औजार बन जाता है।

भारत में मूल्यांकन प्रणाली में सुधारों का संदर्भ

आकलन प्रणाली में सुधार पर अधिकांश आयोगों ने जोर दिया है। यह एक ऐसा मुद्दा रहा है जिस पर पिछले सौ सालों से सुधार की अनुशंसाएं की गई हैं। अंग्रेजों के जमाने के सेडलर कमीशन 1917-1919, हर्टाग कमेटी 1929 और सार्जेंट प्लान 1944 में भी परीक्षा सुधार की बातें कही गई हैं। आजादी के बाद मुदालियार आयोग 1953, कोठारी आयोग 1964, शिक्षा नीति 1968 और नई शिक्षा नीति 1986, शिक्षा बिना बोझ के 1993, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 और 2005 में परीक्षा प्रणाली को बदलने की सिफारिशें की गई हैं।

इन सिफारिशों की प्रकृति समय के साथ बदलती रही है, परंतु कुछ प्रमुख सुझाव इस प्रकार हैंः परीक्षा में व्यक्ति के विकास के विभिन्न क्षेत्रों को शामिल करते हुए उसे व्यापक बनाने, रटने पर आधारित प्रश्नों के स्थान पर समझ, अनुप्रयोग एवं उच्च संज्ञानात्मक कौशलों को जांचने वाले प्रश्न, आकलन हेतु विभिन्न तरीकों का उपयोग, बच्चों के कार्यों का दस्तावेजीकरण, नम्बरों के स्थान पर ग्रेड का उपयोग करना और अभी हाल में आकलन का सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में उपयोग करते हुए सीखने को सुगम बनाने के सुझाव दिए गए हैं।

इन नीतियों और आयोगों ने शिक्षातंत्र को अपने दृष्टिकोण में बदलाव के लिए प्रेरित भी किया है जिसके परिणामस्वरूप बच्चों की निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 ने हर बच्चे के लिए परंपरागत मूल्यांकन की जगह सतत एवं समग्र मूल्यांकन करने की बात कही है। स्कूल टेस्ट या परीक्षा लेने के लिए अपने विवेक का उपयोग कर सकते हैं परंतु यह अधिनियम अनिवार्य कक्षोन्नति (No Detention) की बात करता है तथा कक्षा आठ तक बोर्ड परीक्षा की मनाही करता है।

सतत और समग्र मूल्यांकनः उद्देश्य, सिद्धांत और आवश्यकता

सतत एवं समग्र मूल्यांकन शिक्षा के उद्देश्यों से निकली एक कड़ी है जो बच्चे के समग्र विकास की प्रक्रिया को सुगम करने में सहायक होती है। इसमें अन्तर्निहित सिद्धांत शिक्षाशास्त्र के मजबूत आधारों पर टिके हैं और आकलन को कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के अभिन्न अंग के रूप में पेश करते हैं ताकि सही मायने में शिक्षा के उद्देश्यों को साकार किया जा सके। सतत एवं समग्र मूल्यांकन में न सिर्फ स्कूली ज्ञान के विभिन्न क्षेत्र आकलन का विषय होते हैं बल्कि कला, कौशल, बच्चे के रुचि-रुझान एवं सामाजिक अभिवृत्ति और मूल्य आदि भी इसमें शामिल होते हैं। यह प्रक्रिया बच्चे की जरूरत के हिसाब से शिक्षक को अधिक उत्तरदायी बनाने और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को जरूरत के अनुसार परिवर्तित करने में सहायक होती है। आकलन की यह नई समझ बच्चों को तनाव, भय, चिंता आदि से दूर रखने का भी कारगर उपाय है। साथ ही बच्चों के कार्यों का रिकॉर्ड और दस्तावेजीकरण बच्चों का सीखना कैसे होता है, इस पर शिक्षक और सीखने वाले की समझ को भी समृद्ध करने में मदद करता है। यह अभिभावकों के लिए बच्चों के सीखने का एक प्रमाण भी पेश करता है।

यहां इस बात का उल्लेख जरूरी है कि पिछले कुछ दशकों में बच्चों के प्रति नजरिए में बदलाव आया है। पहले यह माना जाता था कि बच्चे महज मिट्टी का लौंदा, खाली बर्तन या कोरी स्लेट हैं। यह सीखने के सिद्धान्तों में बदलाव का द्योतक भी है। हम जानते हैं कि समस्त सीखना किसी अनुकरण या अभ्यास मात्र से संभव नहीं है। बच्चा जब स्कूल आता है तो एक हद तक वह अपने समुदाय और परिवेश का ज्ञान अपने साथ लेकर आता है। बच्चों के शिक्षण के लिए इसके खास निहितार्थ हैंः

स्कूल में बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को बच्चे के पूर्व ज्ञान में बढ़ोतरी या उसके सीखने की निरंतरता के रूप में स्वीकारना। स्कूल आने से पूर्व ज्ञान को महत्त्व देना।

- बच्चे का एक व्यक्ति के तौर पर सम्मान करना।
- बच्चे की सीखने की प्रक्रिया के अनुकूल शिक्षण विधि अपनाना।
- शिक्षण विधियों में ही आकलन के तरीके और उपकरणों को शामिल करना।

हर व्यक्ति का सीखना एक जैसा नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुसार चीज़ों को समझता है तथा अर्थ निर्माण करता है। हम सभी जानते हैं कि किन्हीं दो व्यक्तियों के अनुभव एक जैसे नहीं होते। प्रत्येक बच्चे की एक दूसरे से अलग व स्वतंत्र सत्ता को स्वीकारने के साथ ही यह बात भी माननी चाहिए कि प्रत्येक बच्चे के सीखने की प्रक्रिया भिन्न हो सकती है। आकलन के परंपरागत तरीके इसकी अनदेखी करते हैं। पास-फेल की परिपाटी केवल कुछ बच्चों को ही आगे बढ़ने के अवसर देती है। परीक्षा प्रणाली एक प्रकार से पास-फेल और डिवीजन के मार्फत समाज में फैली गैर-बराबरी को ही पोषित करती है। इसके अलावा एक और बात है जो परंपरागत आकलन के तरीकों में बदलाव

की मांग करती है। एक समस्या इस प्रणाली का बहुत ज्यादा पाठ्यक्रम केन्द्रित होना है। स्कूली ज्ञान के परंपरागत विषय क्षेत्रों के अलावा बच्चे की प्रतिभा के विभिन्न आयामों को आकलन का हिस्सा ही नहीं बनाया जाता। यह प्रणाली बच्चों में भ्रम पैदा करती है कि जितना भी ज्ञान है वह स्कूली किताबों में मौजूद है। इसमें ज्ञान को एक सीमित मायने में ही अहमियत दी जाती है। बच्चे की व्यक्तिगत रुचियों, विशेषताओं और रुझानों को परंपरागत प्रणाली महत्त्व नहीं देती। अतः आकलन की एक ऐसी प्रक्रिया अपनाई जाए जिसमें:

- बच्चों के द्वारा सीखे गए का आकलन सीखने के दौरान लगातार चलता रहे (न कि सारा दारोमदार सत्र के अंत की परीक्षाओं पर हो) और जरूरत होने पर उसे मदद मुहैया कराई जा सके।
- बच्चों के सीखने की गति और रुचियों को ध्यान में रखते हुए विविध उपकरणों और शिक्षण विधियों का उपयोग किया जाए ताकि हर एक बच्चा सीख सके।
- प्रत्येक बच्चे की अभिरुचियों और व्यक्तिगत विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए उनका भी आकलन किया जाए ताकि बच्चे का समग्र विकास संभव हो सके।

बच्चे के अपने परिवेशीय ज्ञान को कक्षा-कक्ष और स्कूल में जगह मिल सके ताकि वह अपने-आपको अन्य बच्चों (जिन्हें तथाकथित रूप से 'तेज' कहा जाता है) से हीन न समझे और उनमें समानता का भाव विकसित हो सके। सभी बच्चे पास-फेल के चंगुल से मुक्त होकर परीक्षा के भय से मुक्त हो सकें।

उत्तराखण्ड में सतत एवं समग्र मूल्यांकनः एक पुनरावलोकन

उत्तराखण्ड में आकलन में बदलाव के प्रयास दो दशक पुराने हैं। 1997-98 में उत्तर प्रदेश के तीन जिलों वाराणसी, गाजियाबाद और अल्मोड़ा के एक-एक विकासखण्ड में 'सीखे गए' के आकलन के स्थान पर 'सीखने के लिए' आकलन की कोशिश की गई। इस प्रक्रिया को नाम दिया गया 'सतत व्यापक मूल्यांकन'। वर्ष 2000 में उत्तराखण्ड राज्य की स्थापना के बाद 2001 से 'सतत व्यापक मूल्यांकन' पर शिक्षकों के सकारात्मक फीडबैक के पश्चात् इसे 2006-07 में सभी प्राथमिक विद्यालयों और 2007-08 में सभी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आरंभ किया गया। शिक्षा का अधिकार कानून, 2009 के बाद विभिन्न संस्थाओं के साथ इसकी समीक्षा की गई। इन चर्चाओं से यह बात उभरकर आई कि सीसीई से संबंधित कार्य अपेक्षित रूप से नहीं हो पा रहा है। एक अध्ययन से सीसीई की समझ संबंधी कुछ मुख्य बातें सामने आईं। एक, स्कूल में दिए गए दस्तावेज और प्रपत्र भरना ही सीसीई है। दो, कई बार परीक्षाएं लेने को भी सीसीई कहा गया और तीन, साल में एक बार होने वाले वार्षिक मूल्यांकन को बाल मैत्रीपूर्ण तरीके से करना सीसीई है।

इस अध्ययन के नतीजों के बाद सर्व शिक्षा अभियान, एससीईआरटी और अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन के सदस्यों की एक कोर टीम का गठन किया गया जिसने सीसीई पर एक पायलेट प्रोजेक्ट पर काम की शुरुआत की।

पायलेट प्रोजेक्ट की प्रक्रिया

कार्यशालाओं और आठ राज्यों के सीसीई प्रारूपों का आलोचनात्मक विश्लेषण करने के बाद यह समझ बनी कि इसे सही रूप में लागू करने के लिए इस पर शिक्षकों की समझ बनाना आवश्यक है। सीसीई को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक परिस्थितियां बनाने के लिए सीसीई को इन चार बिंदुओं में समाहित किया गया:

- सतत एवं समग्र मूल्यांकन-बच्चों को समझने की प्रक्रिया के रूप में
- सतत एवं समग्र मूल्यांकन- सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के रूप में
- सतत एवं समग्र मूल्यांकन- शिक्षक के सशक्तीकरण की प्रक्रिया के रूप में
- सतत एवं समग्र मूल्यांकन- मूल्यांकन में बदलाव की प्रक्रिया के रूप में।

इस समझ के बाद सीसीई पर कार्य करने हेतु विषयवस्तु के मुख्य क्षेत्रों को कोर टीम ने एक स्वरूप दिया और समझ विकसित करने के लिए नियमित कार्यशालाओं का सिलसिला आरंभ किया। इन कार्यशालाओं और विचार विमर्श के बाद कुछ निर्णय लिए। जैसे, सीसीई को पूरे राज्य में एक साथ लागू नहीं करेंगे, सबसे पहले 50 स्कूलों के साथ एक पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में करके देखा जाएगा, पायलेट प्रोजेक्ट की प्रक्रिया 2 साल की होगी। कार्यशालाओं के जरिए बनी समझ को स्कूलों में लागू करके देखा जाएगा, आदि।

नवम्बर 2011 से चयनित विद्यालयों के साथ इस प्रोजेक्ट की शुरुआत हुई। कार्यशालाओं के माध्यम से शिक्षकों की आकलन पर समझ विकसित करने के प्रयास किए गए और फील्ड के दौरान फोरम की बातचीत को करके देखने के मौके दिए गए। इस समझ के साथ शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्रों पर चर्चा की शुरुआत की गई। चर्चा के केन्द्र में प्रश्न यह था कि क्या हम शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक क्षेत्रों को अलग-अलग देखें या फिर ये दोनों आपस में गुंथे हुए हैं? हमने पाठ्यपुस्तकों में यह देखने और समझने की कोशिश की कि जिन विषयों को हम सह-शैक्षिक मान रहे हैं; क्या उनके लिए हम कुछ संकेतक बना पाते हैं? इससे यह समझ बनी कि पाठ्यपुस्तकों में दिए गए पाठों को सिर्फ पूरा करने से काम नहीं चलेगा बल्कि बच्चों की समझ को इन संकेतकों के सापेक्ष देखने की जरूरत है। पहली कार्यशाला में समूह कार्य के रूप में जानबूझकर पाठ्यपुस्तकों का उपयोग किया गया क्योंकि पाठ्यपुस्तक सभी विद्यालयों, शिक्षकों बच्चों के पास उपलब्ध थीं। पहली कार्यशाला के अंत में यह मिलकर तय किया गया कि सभी शिक्षक कक्षा में शिक्षण कार्य करने से पहले प्रत्येक पाठ से कुछ संकेतक बनाएंगे और अगली कार्यशाला में पढ़ाए गए पाठों के संकेतक लेकर आएंगे।

दूसरी कार्यशाला में शिक्षकों के अनुभवों पर विस्तार से चर्चा की गई। शिक्षकों ने न केवल अपने बनाए गए संकेतक साझा किए बल्कि यह भी साझा किया कि स्कूल में किए गए काम से उन्होंने कैसे तय किया कि अमुक बच्चा इस संकेतक को जान गया है। एक बार जब शिक्षकों के बीच यह स्थापित हो गया कि हमारे कार्यों को सुनने और साझा करने की जगह इन कार्यशालाओं में है तो आगे की कार्यशालाओं में सभी शिक्षक साथी प्रमाण लेकर आने लगे। दूसरी कार्यशाला में पाठ्यपुस्तकों से थोड़ा आगे जाकर पाठ्यक्रम, विषय की प्रकृति, कौशल और संकेतकों पर चर्चा हुई। इस बात पर साझा समझ बनाने की कोशिश की गई कि पाठ्यपुस्तकें पाठ्यक्रम पर आधारित होती हैं, अतः केन्द्र में पाठ्यक्रम है न कि पाठ्यपुस्तक। पाठ्यपुस्तक एक साधन मात्र है, अतः संकेतकों का पाठ्यक्रम से विषय की प्रकृति और कौशलों पर साझा समझ बनाते हुए निर्माण करना होगा। इसके साथ ही शिक्षकों ने यह भी तय किया कि जिन प्रमाणों (तरीकों) की शेयरिंग इस कार्यशाला में हुई है उनमें से कुछ पर सभी स्कूल अगली बार कार्य करके लाएंगे। इनमें से कुछ तरीके निम्न थेः

1. बाल अखबार
2. स्व-मूल्यांकन प्रपत्र
3. बॉक्स-फाइल में टिप्पणी लिखने की प्रक्रिया
4. बच्चों की मदद से प्रश्न का निर्माण

दूसरी कार्यशाला के बाद शिक्षक एक रणनीति बनाकर काम करने लगे। अमुक बच्चे को कोई संकेतक आ गया, इसके साक्ष्य लेकर आना तय किया गया। इसके बाद यह समझ बनने लगी कि शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्र आपस में गुंथे हुए हैं। तीसरी कार्यशाला में शिक्षकों की शेयरिंग के पश्चात् कार्यशाला के केन्द्र में संकेतकों को बनाना और सभी पायलेट विद्यालयों हेतु एक समान प्रपत्र तक पहुंचने की कोशिश की गई। यह जरूरी समझा गया कि शिक्षक स्वयं संकेतक बनाएं। परंतु व्यवहारिक रूप से तय किया गया कि प्रत्येक विषय हेतु संकेतकों की एक सूची प्रगति-पत्र और सीसीई रजिस्टर में दी जाए। इसके साथ ही इसमें कुछ स्थान खाली रखा जाए जहां शिक्षक अपने बनाए संकेतक भी जोड़ सकते हों। ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि चर्चाओं में बार-बार यह बात आ रही थी कि सीखने-सिखाने के तरीके अलग होंगे तो संकेतक भी अलग होंगे। इसके साथ यह भी तय किया गया कि सीसीई के प्रपत्र के लिए नई

चीजों को विकसित करने की जगह हम यह कोशिश करेंगे कि वर्तमान में चल रहे प्रपत्रों को बेहतर/बदलाव कर उसका उपयोग किया जाए। इसी कार्यशाला में यह भी तय हुआ कि अपने राज्य में हम जिस तंत्र को विकसित करेंगे वह अंक रहित और ग्रेड रहित होगा। इसमें शिक्षक साथियों को बच्चों के लिए टिप्पणियां होंगी।

चौथी कार्यशाला में प्रपत्रों को अन्तिम रूप देकर मार्गदर्शिका विकसित करने का कार्य किया गया। इसके पश्चात् एक सम्पूर्ण अकादमिक सत्र के दौरान इस पूरी प्रक्रिया को जमीनी जांच करके देखा गया कि इस प्रक्रिया को करने में किस तरह की दिक्कतें शिक्षकों को आ रही हैं। शिक्षकों के फीडबैक को शामिल कर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के निर्देश बनाए गए जो कि अभी प्रारूप की शक्ल में ही हैं जिसे संभवतः राज्य पूरे प्रदेश में लागू कर सकता है। इन चारों कार्यशालाओं और जमीनी जांच के दौरान, जो कि 3 वर्षों के दौरान हुई थी, इसे सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण में भी सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पर विस्तार से बातचीत की गई। प्रथम वर्ष में सतत और व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा एवं विषय की प्रकृति तथा संकेतकों को लेकर सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण में 10 दिन तक बातचीत हुई। द्वितीय वर्ष में विषय की विषयवस्तु, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पढ़ाने के दौरान कैसे कर सकते हैं तथा इसके प्रपत्रों पर 8 दिन तक बातचीत हुई। तीसरे साल में बच्चों की प्रतिक्रियाओं पर टिप्पणी कैसे करें तथा सीसीई के संभावित निर्देशों को लेकर तीन दिन तक बातचीत हुई।

पायलेट प्रोजक्ट की प्रक्रिया की कुछ खास बातेंः

- ✧ सामान्यतः राज्य में नीतियों के निर्माण में राज्य स्तर की संस्थाएं या राज्य स्तरीय संदर्भ व्यक्ति ही हिस्सा लेते हैं। एक आम शिक्षक इसमें शामिल हो और उसकी बात को सुना जाए ऐसा कम ही होता है। इस प्रक्रिया में शिक्षकों को प्राथमिकता दी गई उन्हें न केवल अपनी बात कहने का अवसर मिला बल्कि उन्होंने ही निर्देशों, प्रक्रियाओं तथा प्रपत्रों को अन्तिम रूप दिया।
- ✧ शिक्षक इस पूरी प्रक्रिया में शामिल थे इसलिए इस पूरी प्रक्रिया को वे समझ रहे थे और आत्मसात् कर रहे थे।
- ✧ सामान्यतः कई बार राज्य स्तर से निर्देश पहले निकल जाते हैं और इन निर्देशों पर समझ बनाने के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण बाद में होता है। इस पूरी प्रक्रिया में कार्यशाला एवं प्रशिक्षण की मदद से समझ बनाने पर काम पहले किया गया और निर्देश बाद में बने।
- ✧ सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण में मुख्य संदर्भ व्यक्तियों के रूप में पायलेट विद्यालयों के शिक्षकों को स्थान दिया गया। इससे इन शिक्षकों का अपने कार्य को लेकर उत्साह तो बढ़ा ही साथ ही अपने कार्य पर विश्वास भी बना। शिक्षक-प्रशिक्षण के दौरान जब ये शिक्षक अपने विद्यालय में किए गए कार्यों के उदाहरण बाकी प्रतिभागियों के साथ साझा करते थे तो उन प्रतिभागियों में भी इन चीजों को लेकर स्वीकार्यता बनी। कुल मिलाकर यह विश्वास बना कि कक्षा के अंदर यह किया जा सकता है।
- ✧ प्रत्येक कार्यशाला में शुरुआत के डेढ़ से दो दिन तक शिक्षकों के अनुभवों को सुनने का प्रावधान किया गया। इससे धीरे-धीरे सभी में यह समझ बनी कि उन्हें यहां आकर अपने काम/अनुभव के बारे में कुछ कहना है। इस तैयारी ने कार्यशाला को अगले स्तर पर ले जाने में काफी मदद की।
- ✧ प्रत्येक कार्यशाला पिछली कार्यशाला को याद करने से शुरू होती थी। इस प्रक्रिया की मदद से यह बात स्थापित हुई कि अगली कार्यशाला पिछली कार्यशाला से अगला कदम है, अलग से उसका कोई अस्तित्व नहीं है।
- ✧ कोर टीम की पहली कार्यशाला एवं सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण के प्रथम वर्ष में इस पर भूमिका बांधते समय शिक्षक साथियों से कहा गया कि इस विषय पर बातचीत अगले तीन साल तक चलने वाली है। इसके साथ ही सभी लोगों को पहली कार्यशाला में एक रजिस्टर दिया गया। साथ ही यह भी कहा गया कि यह महत्त्वपूर्ण और लंबा कार्य है, इसलिए आप सभी लोगों को इस विषय पर आगे की सभी कार्यशालाओं में इस रजिस्टर को लेकर आना है। शिक्षक साथियों द्वारा इस रजिस्टर को यात्रा की शुरुआत से अंत तक प्रत्येक कार्यशाला में लाने में पिछली

कार्यशालाओं को याद करने में काफी मदद की। क्योंकि पूरी बातचीत एक जगह पर रजिस्टर में ही थी इसलिए पूरी बातचीत को एक विकास के रूप में समझने में काफी मदद मिली।

इस पायलेट प्रोजेक्ट में शामिल विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं अपनी कक्षाओं में सीसीई पर कार्य कर रहे हैं। इन शिक्षकों के लिए सीसीई के लिए असमंजस भरे रास्ते का धुंधलका अब छंटने लगा है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा का मार्ग कई और शिक्षकों और विद्यालयों की ओर रुख कर रहा है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में वर्णित विद्यालयों का स्वरूप संभव होने की नई उम्मीदें जाग रही हैं लेकिन किसी भी नए और अच्छे विचार की सर्व स्वीकार्यता में कठिनाइयों और चुनौतियों भी कोई छोर नहीं होता।

सतत एवं समग्र मूल्यांकन की चुनौतियां

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में शैक्षणिक प्रक्रिया का ऐसा ताना-बाना बुना जाना है, जिसके केन्द्र में बच्चा हो। हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती बच्चों को समझने की है। साथ ही यह भी समझना है कि दरअसल बच्चे अपने आसपास की दुनिया के बारे में बहुत कुछ जानते हैं। वे सहज रूप से अपने आसपास की दुनिया से अंतःक्रिया करके ज्ञान का निर्माण करते हैं। शिक्षक को सबसे पहले यह करना है कि वह इस प्रक्रिया को समझे और उसमें हिस्सेदार बनने की कोशिश करे। साधारणतया माना जाता है कि किसी बच्चे को अगली कक्षा में जाने से रोकना और फेल करना ठीक है। लेकिन यह बात शिक्षाशास्त्र की अवधारणाओं की दृष्टि से सही नहीं है। जब बच्चा स्वभाविक प्रक्रिया में सीख रहा है तब उसे फेल करने या कक्षा में रोके रखने का औचित्य स्पष्ट नहीं होता। बच्चों को इस तरह के अवसर देना जरूरी है कि वह सीखकर अगली कक्षा में पहुंच सकें।

कई बार शिक्षक इसे एक कार्यक्रम के तौर पर देखते हैं जो अभी आया है और कल खत्म हो जाएगा। कई शिक्षक इस पर भी यकीन करते हैं कि यह पहले से चला आ रहा है और जब वह स्वयं पढ़ाई करते थे तब भी सतत एवं समग्र मूल्यांकन होता था, इसलिए यह नई बोतल में पुरानी शराब है। कई शिक्षक इसे ऐसे भी समझते हैं कि परंपरागत परीक्षाओं को सतत और व्यापक मूल्यांकन की परीक्षाओं से बदल दिया गया है। कई शिक्षक इसे ऐसे भी देखते हैं कि सीसीई आ गया जैसे कि शिक्षकों पर नजर रखने वाला कोई तंत्र हो।

आमतौर पर शिक्षक मानते है सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया वैचारिक रूप से अच्छी है। मगर उन्हें यह चुनौतीपूर्ण लगता है कि इस प्रक्रिया को व्यवहारिक रूप कैसे दिया जाए? इसके साथ यह भी चुनौती है कि कहीं यह प्रक्रिया यांत्रिक बनकर न रह जाए। अन्य एक बाधा इसकी सामाजिक स्वीकृति की भी है। लंबे समय से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के आकलन के परंपरागत तरीके रहे हैं। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन इन पुरानी पद्धतियों में वांछित सुधार करने का एक प्रभावशाली तरीका है। इसको आत्मसात करते हुए अपनाने का अर्थ यह है कि हम मूल्यांकन की परंपरागत प्रणाली को उसके नए स्वरूप में अपना रहे हैं।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, बच्चों के मूल्यांकन की प्रक्रियाओं में मूलभूत सुधार करते हुए सीखने-सिखाने की बात करता है। इसके क्रियान्वयन के लिए सरल और सहज उपकरण/शैक्षणिक साधनों एवं तकनीकों की जानकारी जरूरी है। साथ ही उनका रिकॉर्ड रखना या दस्तावेजीकरण करना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के अंतर्गत बच्चों के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का मूल्यांकन किया जाना है। इसके लिए समूह में कार्य करना, बाल मेला, प्रोजेक्ट कार्य, पोर्टफोलियो, सृजनात्मक कार्य, अभिव्यक्ति के अवसर देने होंगे और बच्चों की प्रगति के बारे में इनसे क्या-क्या सूचनाएं मिलती हैं, उन्हें सजगता के साथ देखना होगा।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में शिक्षकों की तैयारी के साथ पूरे शिक्षा तंत्र की तैयारी महत्त्व रखती है। यह तैयारी स्पष्ट नज़रिए की मांग करती है। अक्सर शिक्षक यह चिंता प्रकट करते हैं कि वे किसी प्रक्रिया को उसके वास्तविक मायनों के साथ काम अपना रहे होते हैं, किंतु जब प्रशासनिक अमले या अकादमिक सहयोग एवं व्यवस्था के लोग विद्यालयों में जाते हैं तो वे इस काम को मान्यता देने के बजाय कई बार शिक्षक साथियों को हतोत्साहित करते हैं। कभी-कभी तो प्रधानाध्यापकों और अन्य साथियों से ही ऐसे कामों को समर्थन नहीं मिल पाता। इसकी वजह यह

होती है कि आकलन को बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से अलग काम या कार्यक्रम के रूप में देखने का नज़रिया हावी रहता है। यदि इस प्रक्रिया को विद्यालयों की प्रक्रिया से अलग करके देखा-समझा जाता है तो यह काम बोझ जैसा लगेगा। ऐसे में इसके असल मायने गुम हो जाते हैं और यह प्रक्रिया महज औपचारिकता बनकर रह जाती है इसलिए व्यवस्था की तैयारी का मुद्दा महत्त्व का है। इसके साथ ही विद्यालय में शिक्षक-छात्र अनुपात, बच्चों की बैठने की उचित व्यवस्था तथा शिक्षण सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करना भी महत्त्वपूर्ण है।

इस पूरी प्रक्रिया में अंकों और ग्रेड से हटकर बच्चे को संकेतकवार टिप्पणियों के रूप में फीडबैक साझा करने की प्रक्रिया विकसित की गई है। टिप्पणी लिखना और फीडबैक साझा करना यह इस प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। टिप्पणी लिखना एक कठिन कार्य है। शिक्षक स्वयं यह मानते हैं कि यह एक नया काम है। सामान्यतः शिक्षकों की टिप्पणियां 'बहुत अच्छा', 'अच्छा', 'सुधार की आवश्यकता है' आदि के रूप में हुआ करती थीं। इन टिप्पणियों का स्वरूप विवरणात्मक और सकारात्मक हो, इस पर अब शिक्षक समूह में समझ बन रही है। इन टिप्पणियों को लिखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। टिप्पणियों को देने में खासतौर से तब दिक्कत आ रही है जब बच्चे उस अवधारणा को नहीं जानते हैं या अगर सही में कहें तो शिक्षक जिन बच्चों को पहले फेल कर देते थे।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, ''सीखे हुए का मूल्यांकन'' के बजाय ''सीखने के लिए मूल्यांकन'' की पैरवी करता है। समाज में परीक्षा को लेकर गलतफहमी की जड़ें इतनी गहरी जमी हुई हैं कि उन्हें आसानी से उखाड़ फेंकना संभव नहीं। कई अभिभावकों ने विद्यालयों में आकर इस तरह के प्रश्न पूछ कि परीक्षाएं क्यों नहीं हो रही हैं? अभिभावक चाहते हैं कि उनके बच्चे परीक्षाओं में न केवल पास हों बल्कि अच्छे से अच्छे अंक अर्जित करें। उन्हें इस बात की परवाह या जानकारी नहीं होती कि बच्चों को क्या आता है। निश्चित ही यह एक द्वंद्व है। हम मानते हैं कि ये जड़ें धीरे-धीरे कमजोर होंगी। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन बच्चों को फेल और पास के खांचों में बांटने को ठीक नहीं मानता है। आज के दौर में हम जहां शिक्षा के लोकव्यापीकरण की बात कर रहे हैं, वहीं कुछ बुनियादी समस्याएं बनी हुई हैं जो बच्चों को शिक्षा से वंचित रखती हैं। हमें मिलकर इन समस्याओं के हल भी खोजने होंगे।

> *"एक शिक्षिका बच्चों के साथ गतिविधि करने के बाद कुछ जानकारियां अपने रजिस्टर में दर्ज कर रही थीं। बच्चे समूह में बैठे अपना काम कर रहे थे। ऐसे में एक अभिभावक वहां आ पहुंचे। शिक्षिका से पूछने लगे 'आप लोग क्यों खाली बैठकर टाइम पास करते हैं और बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करते हैं?' शिक्षिका द्वारा प्रतिक्रिया न देने पर अभिभावक ने दोबारा पूछा, 'आप क्या कर रही हैं और ये बच्चे बैठकर क्या कर रहे हैं?' इस पर शिक्षिका ने उन्हें बताया कि मैंने अभी अपने बच्चों के साथ गतिविधि का काम पूरा किया जिसके आधार पर मैं कुछ बच्चों के बारे में जानकारी दर्ज कर रही हूं और जो बच्चे बैठे हैं, वे खाली नहीं बैठे बल्कि 'समूह कार्य' कर रहे हैं। आप चाहें तो इन बच्चों से बातचीत कर सकते हैं।*
>
> *अभिभावक ने पूछा 'आजकल आप टेस्ट भी नहीं लेती हैं।' इस पर शिक्षिका ने अपना रजिस्टर दिखाकर उन्हें बच्चों के बारे में दर्ज जानकारियां दिखाई व उन्हें नई मूल्यांकन प्रणाली के बारे में भी समझाया। इस बातचीत के बाद अभिभावक थोड़े संतुष्ट दिखे।"*

इस पूरे अनुभव ने उत्तराखण्ड में सीसीई की एक मजबूत आधारशिला रख दी है। विद्यालयों के शिक्षक यह मानने लगे हैं कि इस पूरी प्रक्रिया में लगातार कार्य करने से उनका नजरिया बदला है। बच्चों के साथ उनके संबंध बेहतर हुए हैं। पायलेट प्रोजेक्ट में शामिल स्कूलों के शिक्षकों के समूह से बातचीत करने पर मुझे यह समझ में आया कि वे मानते हैं कि यह किया जा सकता है बशर्ते कोई इसे बोझ की तरह न करे। जितना हो रहा है उतना ही करो पर जितना भी करो उसे खुशी से करो। समर्पित शिक्षक और उसके समर्पण पर विश्वास करती शासकीय व्यवस्था ने यह कोशिश की है कि राज्य के हर विद्यालय के हर बच्चे के सीखने-सिखाने की ठोस इमारत खड़ी की जा सकेगी। ◆

लेखक परिचयः सौरभ राय अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, देहरादून में कार्यरत हैं। उत्तराखण्ड राज्य के डीएलएड के पाठ्यक्रम विकास एवं सेवारत शिक्षक प्रशिक्षणों के मॉडयूल विकास में शामिल रहे हैं। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन उत्तराखण्ड की कोर टीम के सदस्य रहे हैं।